ISSN 2249-894X Impact Factor : 3.1402 (UIF) Volume - 5 | Issue - 9 | June - 2016
Review Of Research

'वर्तमान जीवन की प्रतिध्वनि चंद्रसेन विराट की गजल'

प्रा. झाकीरहुसेन मुलाणी
विठ्ठलराव शिंदे आर्टस कॉलेज, टेंभुर्णी ता. माढा, जि. सोलापूर ।

प्रस्तावना :—

चंद्रसेन विराटमूलत: गीतकार है। समय परिवर्तन के साथ उनका रूझान गजल की ओर झुका। गीतकार के रूपमें ख्याती प्राप्त विराट युगानुरूप विधा परिवर्तन में सफल रहें। वे अच्छे गीतकार, उत्तम गजलकार और प्रसिध्द दोहाकार के रूपमे हिन्दी साहित्य आकाश में चमकते रहें हैं। सफलता के हदों को पार करने के उपरान्त उनका रूझान दोहा और गजल की ओर झुका है। 'दोहा' इस काव्य साधन को विराट जी ने विधा काजामा पहनाया। उनके दोहे मध्यकालीन भक्ति साहित्य की याद दिलाते है। उनके गीत किसी भी हिन्दी गीतकारों के गीतों से होड ले सकते है। वे बहुमुखी प्रतिभा के धनी है, नये साहित्यकारों के लिए उनका साहीत्य पथ प्रदर्शित करता रहेगा। जिस साहित्यकार के साहित्य में अभिव्यक्ति की इमानदारी होती है। वह समय के हाशिये पर जीत जाता है। विराट की गजल वर्तमान जीवन का दथ्तावेज है, जिनका विषय वर्तमान युग का मानव जीवन रहा है। वर्तमान जीवन की हर स्थिति, समस्या और समाज का चेहरा उनकी गजल है, उसके तेवर का क्या कहना। डॉ. सुरेश गौतम के शब्दों में - " विराट की गजलों ने गजल को हुस्न, इश्क, मोहब्बत, जाम, साकी, भयखाना की रोमानियत से निकालकर बिजली के नंगे तारें से जोडा और आनादर्शी जिन्दगी को पार-पार विखनेसे बचाया। हिन्दी की बुनावट में गजल को बुनकर मनुष्य-समाज को जागरूक किया, खुद का पहरेदार बनाया। संघर्ष का पथ दिया, उडने को आकाश।"

वर्तमान जीवन पर भाष्य करनेवाली गजल चंद्रसेन विराट की है। वास्तव जीवन के खुरदरें चित्रों का संग्रह विराट की गजल है। सामान्य जनों का हुंकार, दर्द, प्यार और वर्तमान की हू-ब-हू स्थितियों का सुन्दर मेल विराट की गजल है। उनकी गजल फारसी और ऊर्दु गजल का अनुकरण नहीं है। चंद्रसेन विराट गजल को मुक्तिका सम्बोधीत करते है। उनकी सोच में शबाब, शराब, सूरा-सुंदरी, मदिरा-मधुशाला और मयखाने में अटकी गजल को संकरी गली से बाहर लाकर हिन्दी ने उसे नये संस्कार दिए है। फलत: उनकी गजल वर्तमान युग के सामायिक समस्या को वास्तव रूप में प्रस्तुत करती है। आझादी के बाद देश का स्वरूप धीरे-धीरे बदलने लगा। भौतिक प्रगति गति के साथ होने लगी। भौतिकता संस्कृति और संस्कारों को हटाकर कर अपनी तौर तरीको का निर्देश करती है। नतिजा मानवता और सोच में अंतर बढने लगता है। शहरों का विकास और गाँवों का विराना बन जाना भौतिक उन्नति का परिणाम है। संवेदना शून्य मानसिकता का विकास शहरों में पाया जाता है, वर्तमान युग के शहरों का बखुबी के साथ वास्तव और सार्थक वर्णन विराट की गजल में देखिए -

"जलता जंगल महानगर
सूखा दल-दल महानगर
खुलती बोतल महानगर
बौने घर झोपड-पट्टी

ऊँचे हॉटल महानगर।" (धारा के विपरीत)

भारत देश के महानगरों का इतना वास्तव चित्रण अन्य किसी का गजल में नहीं है। संवेदना का गला घोटनेवाली मानसिकता का उदय महानगरों में होने लगा है। जहीर कुरेशी गजल की याद दिलानेवाली 'महानगर' नामक विराट की जगल है। वेश्या की मुस्कान और शहरों के रिश्तों में अन्तर नहीं है। विराट 'कहाँ मिलता है' गजल में लिखते है -

"आदमी लाख मिले पर उनमें
एक इन्सान कहाँ मिलता है।" (धारा के विपरीत)

शहरों से मानवता, संवेदना, प्यार गायब हैं गजलकार इसी बात से दु:खी है। दोहरी जिन्दगी जीने वालों का तॉता शहरों में लगा है। शहरों के दोहरे व्यक्तित्व को समझना मुश्किल है। शहर का आदमी झूठी जिन्दगी का अभिनेता है। नीति और आचरण में जमी आस्माँ का अन्तर है। चंद्रसेन विराट सुन्दर चेहरों के भीतर छिपे विकृत रूपों का पर्दा तार-तार करते है- 'मेरे शहर के लोग' गजल के यह शेर वर्तमान युग के शहरों का यथार्थ चित्रण में सफल है -

" वैसे बडे जहीन है, मेरे शहर के लोग
कुछ कुछ मगर कमीन है, मेरे शहर के लोग
मन से तो है कुरूप किसी पेत की तरह
तन से बडे हसीन है, मेरे शहर के लोग
संवेदना नहीं है फकत हाडं मॉस के
जैसे कोई मशीन है, मेरे शहर के लोग।"(धारा के विपरीत)

वर्तमान युग के महानगरों में बसे लोगों का हू-ब-हू चित्रण 'मेरे शहर के लोग' गजल में विराट जी ने किया है। गजलकार शहवासियों के प्रति क्रोध व्यक्त करता है। शहर शब्द ही गजलकार को एक गंदी गाली लगती है। इसी गजल का शेर दृष्ठव्य है -

"बाहर से देखिये तो है गांधी बने हुए
भीतर इदी अमीन है, मेरे शहर के लोग।" (धारा के विपरीत)

चंद्रसेन विराट का हिन्दी गजल विकास में विशेष योगदान रहा। उनकी गजलों में समाज प्रतिबिम्ब है। बम्बई महानगर कैसा है? इसका उत्तर उनकी गजल देती है। मोह और आकर्षण का केंद्र बम्बई है किन्तु बदले में बहुत कुछ लेता भी है - जैसे -

"परदे पे चमक ने को जो भागा है घरों से,
उस रूप को कोठे पे बिणती है बम्बई।
जो दिख रहा है जैसा वैसा नहीं है वो,
चहरे पे कई चहरे चढाती है बम्बई।
खाना तो फिर भी सस्ता सुलभ है यहाँ,
मगर रहने को आसमान बताती है बम्बई।"

विराट की गजल वर्तमान जीवन के पूरे अयामों पर खरी उतरती है। इस युग के हर समस्या, विचार और भावना का मेल उनकी गजल है। भ्रष्टाचार की समस्या देश का सरदर्द बन चुका है। सरकारी कार्यालयों के काम पैसों पर चलते है। भ्रष्टाचार ही शिष्टाचार बना है। इस वृति के बढने से समाज एवं देश का वातावरण दूषित बना है। सामाजिक जिस पर किसी का जोर नहीं है, आज की समाज व्यवस्था पर जिसकी लाठी उसकी भैस की कहावत जागू होती है। साथ ही अलगाववाद का शिरजोर भी है। विराट की गजल वर्तमान की त्रासदी कही जा सकती है।

जमाना शिफारिशों का है, जिसके पास सिफारिश है उन्हें केवल पद और प्रतिष्ठा प्राप्त है, ज्ञान और प्रतिभा को आज के समाज में सम्मान नहीं मिलता। जौसे

"कुर्सियों पर है सिफारिश मुढतम
और प्रतिभा को ग्रहण है इन दिनों।"

आज के जमाने में हर रोज आगजनी, हत्या और बम विस्फोट की घटनाएँ अलगाववाद और आतंकवाद के कारण जीवन का हिस्सा बन गयी है। इन घटनाओं ने मानवता का खून कर दिया है, साथ मानव की संवेदना को भी कम कर दिया है। विराट कहते है कि पूरा शहर लाश की तरह खामोश पडा है जैसे -

"आतंक इस कदर की कोई बोलता नहीं
खामोश खडे पेड, पात डोलता नहीं
सन्नाटा, हवा बंद, शहर लाश हो गया
सहमा हुआ परिंदा भी पर तोलता नहीं। (धारा के विपरीत)

पेड के पत्तों कॉ न हिलना, परिंदो के पर का आवज न आना भयानक सन्नाटे का प्रतीक है। रोज की यह घटनाएँ सोच पर ताले लगा देती है। सामाजिक मूल्यों का पतन होना, समाज का अहित करता है। सच्चाई, ईमानदारी, भलाई, प्रेम और संवेदना खोखले शब्द बनकर रह गये है। विश्व आतंकवाद से जूझ रहा है, भारतवर्ष इस समस्या से अछूता नहीं है। हिन्दी साहित्य एवं गजलकारों ने उपर्युक्त सभी बातों का हू-ब-हू चित्रण किया है। मानव समूह में बसता है वह अकेला नहीं अपितु पूरी बस्ती, बिमार होने की बात विराट की गजल करती है।

"सख्त बीमार है बस्ती
बहुत लाचार है बस्ती
बिकाऊ है यहाँ सब कुछ
खुला बाजार है बस्ती।" (परिवर्तन की आहट)

चंद्रसेन विराट मानवीय जीवन की अतृप्त कामना और उससे प्राप्त यातना को सही अल्फाज गजल में देते है, यहाँ उनकी उक्ति सरल और सीधी है, संवेदना उसे पढकर आहत हुए बिना नहीं रहती, जैसे -

"उम्र भर जो कम न हो वह कामना है जिन्दगी
कुल मिलाकर यातना ही यातना है जिन्दगी।
....
यह नशे का होश है या होश का है यह नशा
अंत तक टूटे नहीं वह मूर्च्छना है जिन्दगी।" (धारा के विपरीत)

आज के नेतागण अश्वासनों की बारिश करते है, किन्तु एक भी आश्वासन को पूरा नहीं कर पाते। उनकी वृत्ति सुविधा भोगी और लूट की है। भाषणों में दिये गये आश्वासनों की याद उन्हें रहती भी है या नहीं, विराट जी की गजल का एक सुन्दर शेर दृष्ठव्य है -

"स्वप्न तो पक्के मकानों के दिखाये थे कभी
हाय कच्चे झोपडों का ऑगनों का क्या हुआ।" (धारा के विपरीत)

आजकल देश में घोटालों का दौर चल रहा है। नेता जितना बडा घोटाला उतना ही बडा। घोटालों में जितने नेताओं के नाम सामने आए समितियों और आदालतों व्दारा उनको बाइज्जत बरी किया गया है। विराट लिखते है -

"जाँच समिति तो कभी की बैठकर उठ भी गयी
आप पर जो लगे थे, लांछनों का क्या हुआ।" (धार के विपरीत)

समाज आपहिज एवं गूंगा और बहरा है, जिस पर जितना बडा लांछन उसको उतना ही सम्मान देता है। जिसका आचरण शुध्द है वह समाज के लिए मुर्ख साबित हुआ है। क्रांति का झूनझूना बजानेवाले चूप हो गये। क्रांति का इन्तजार करनेवाली आँखे अपलक हो गयी है। विराट सीधा वार करते है उक्ति में इमानदारी के कारण व्यंग्य चूभता भी होगा। नंपुसक समाज हाथों में हाथियार नहीं लेता तब तक कुछ होनेवाला नहीं है। मिमियानेवालों की ही गर्दन पर तेज छूरी चलती है। जंगल बने समाज में भेडिये मात्र सुरक्षित है। भारतीय समाज की विडंबना को स्वर देनेवाली गजल चंद्रसेन विराट जी की है समाज के लोग नित अभावों में जिन्दगी को व्यतित करते है गजलकार की दृष्टि में यह धीमी त्रासदी है अथवा अवयक्त दुख की व्यंजना जिन्दगी है।

भाई-भतीजावाद भारतीय समाज के लिए पुराणा है। गले में हाथ डालके जेब कतरने में निपुण है यहॉ के नेता। उनके खिलाफ बोलना नुकसान उठाने के बराबर है। जिनकी औकात नहीं उन्हें उँच्चे-उच्चे पद मिले। विराट के शब्दों में --

"जो उछलकर बढ गये उँचे पदों की सीढियाँ
माननीयों के भतीजे तो कभी साले रहे।
चोर चौकन्ने बहुत बेहोश घरवाले रहे
चोरियाँ होती रही, गोदाम पर ताले रहे।" (परिवर्तन की आहट)

चंद्रसेन विराट की गजल बीत अनुभूति और जीते जिन्दगी का आयना है। वह दुष्यन्त के बाद के सफल गजलकार है। घुमा फिराकर कहने में विश्वास नहीं करते। सीधी, सहज, सरल भाषा उनके गजल की विशेषता है। विराट की गजल समाज की आपबीती है। दुख इस बात का है कि हृदय और दीमाग तक को भिडनेवाली गजल का असर पाठक पर क्यों नहीं होता? झकझोर ने वाली विराट की गजल गलत है या यहॉ के समाज के लोग सच में पत्थर बने है? समाज की असलियत, राजनीति की कुरूपता, धर्म की अंधी वृत्ति, शिक्षा व्यवस्था का दिन-ब-दिन गिरना, अलगाववादी वृति, आतंकवादी सोच, भ्रष्टाचार सब कुछ साथ में है विराट की गजल में बावजूद परिवर्तन नहीं होता। राजनीतिज्ञ जहॉ पहुँचते है, वहाँ का वातावरण धूमिल होता है, चाहे समाज , धर्म, राजनीति सब जगह गिरावट आ जाती है। विराट ने सही अल्फाज दिए है - जैसे -

"वे किसी संस्थान में जब घुस गये तो धुन लगा
हर बरस घाटे बढे है और घोटाले रहे।"

चारों ओर का वातावरण एक जैसा है। समस्या का मात्र चित्रण उनकी गजल नहीं अपितु उसका समाधान भी गजल में है। कुछ सावधानियों का जिक्र उनकी गजलों में जरूर प्राप्त होता है - जैसे --

"तू हृदय अपना हृदय तक ले चल
अपने परिचय को प्रणय तक ले चल।"

निष्कर्ष :-

गीतकार, दोहाकार और गजलकार के रूप में हिन्दी साहित्य में प्रसिध्द प्रतिभा के धनी, सफल लेखनीकार चंद्रसेन विराट है। हिन्दी की उनकी गजल दुष्यन्त के दिखाये रास्ते पर चल पडी है। उनकी भाषा सामान्य से सामान्य पाठक को भावबोध कराने में सफल है। वर्तमान जीवन के हर पहलू पर उनकी गजल प्रकाश डालती है। गजल के बहाने सारा समाज, राजनीति, धर्म, आचरण साकार होता है। निरंतर चालीस वर्षो

तक चलनेवाली कलम प्रौढ से प्रौढतर बनते चली है। उनके गजल के आकाश में हर चमकते सितारे मौजूद है। उनकी गजल मनुष्य, समाज, देश और दुनिया का मार्गदर्शन करती है।

संदर्भः-

१) धारा के विपरीत (गजल संग्रह) चंद्रसेन विराट
२) परिवर्तन की आहट (गजल संग्रह) चंद्रसेन विराट
३) चंद्रसेन विराट की प्रतिनिधि गजलें - सं. डॉ मधु खराटे